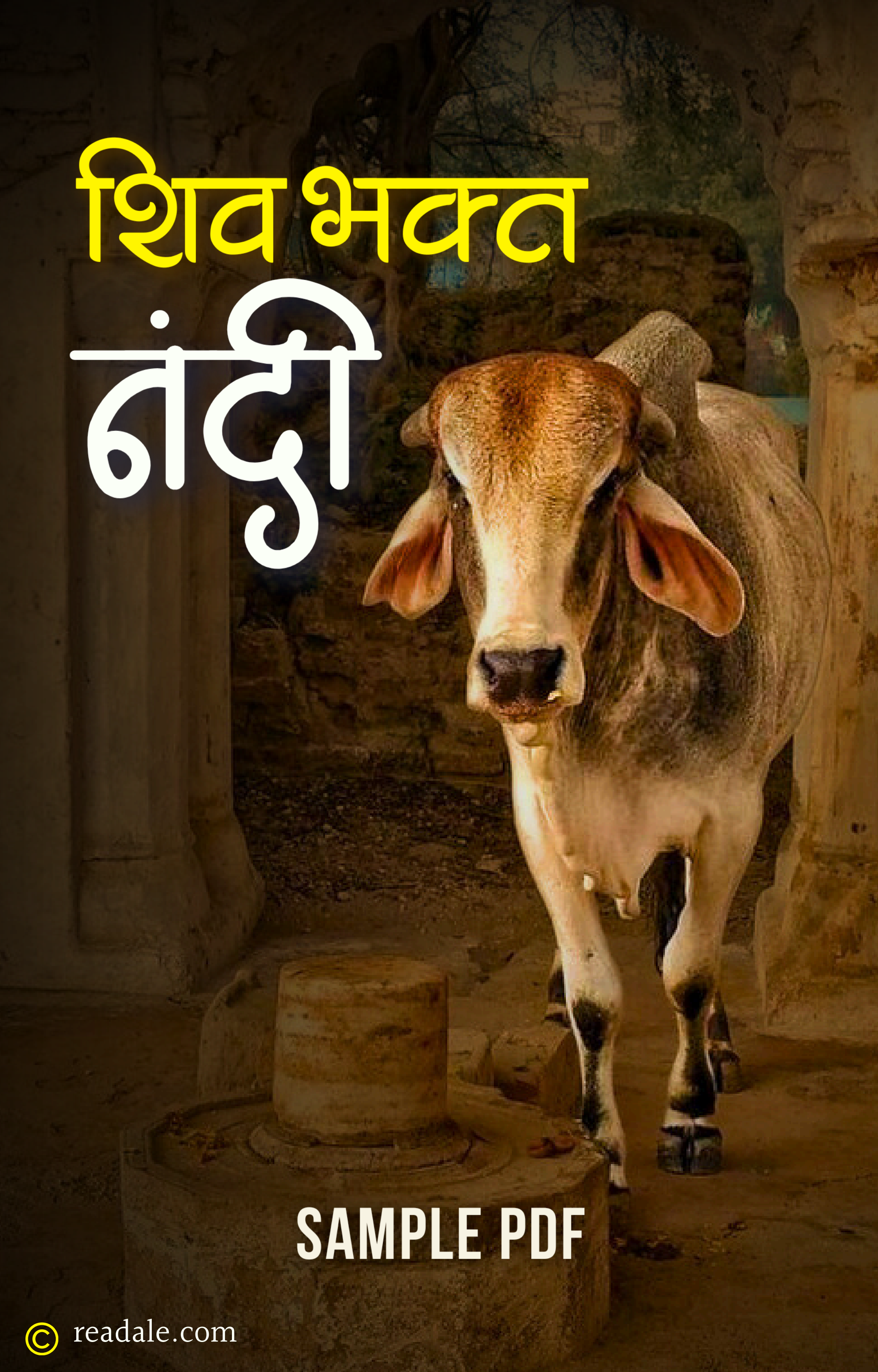
शिव भक्त
नंदी
SAMPLE PDF
© readale.com

Copyright © 2024 Anjali Raj

All rights reserved. No part of this book may be reproduced in any form or by any electronic or mechanical means including information storage and retrieval systems, without permission in writing from the author, except by a reviewer who may quote brief passages in a review.

First Edition, 2024

www.readale.com

Cover design by Antra Raj

Dedicated to-

all GauBhaktas and NandiSevaks

गौर्मे माता ऋषभः पिता में

CONTENTS

INTRODUCTION VIII

CHAPTER 1 16
नंदी: परम शिवभक्त

CHAPTER 2 22
नंदी: धर्म का स्वरूप

CHAPTER 3 26
गौमाता: शिव-प्रिय

CHAPTER 4 31
नंदी: पिता समान

CHAPTER 5 34
गौवंश जो है उत्तम

CHAPTER 6 44
बछड़े बहुत ज्यादा हो जायेंगे

CHAPTER 7 65
आज की दुर्गति

CHAPTER 8 74
पशुपतिनाथ का भक्त नंदी अनाथ

CHAPTER 9 81
प्राचीन समय- I

CHAPTER 10 86
प्राचीन समय- II

CHAPTER 11 92
मतलबी इंसान

CHAPTER 12....................98
इंसान को मतलबी बनाने का षड्यंत्र

CHAPTER 13....................104
षड्यंत्र- I

CHAPTER 14....................111
षड्यंत्र- II

CHAPTER 15....................117
षड्यंत्र- III

CHAPTER 16....................123
षड्यंत्र- IV

CHAPTER 17....................128
राम राज्य कैसा होता है?

CHAPTER 18....................133
प्राचीन vs वर्तमान

CHAPTER 19..................137
समाधान क्या है?

CHAPTER 20..................142
वीगन से गौरक्षा होगी?

CHAPTER 21..................157
आप क्या करेंगे?

CHAPTER 22..................161
उपाय- I

CHAPTER 23..................169
कैसा होगा व्यापार?

CHAPTER 24..................177
बैल से काम क्यों जरूरी?

CHAPTER 25..................182
उपाय- II

CHAPTER 26....................189
क्यों जरूरी है वन का निर्माण?

CHAPTER 27....................195
उपाय- III

CHAPTER 28....................203
कैसी होगी गौशाला?

CHAPTER 29....................210
विपरीत समय: एक अवसर

APPENDIX....................216

ACKNOWLEDGEMENTS.....224

INTRODUCTION

आज से कुछ सालों पहले, लगभग 2-3 साल पहले, मुझे पहली बार ये भीतर तक अहसास हुआ कि पृथ्वी गौवंश के खून से लतपथ है। हर जगह, भारत की मिट्टी में गोवंश का खून मिला हुआ है और ऐसा कोई इंसान या ऐसी कोई भी जगह इस पृथ्वी पर नहीं है जो गोवंश की हत्या का भागीदार नहीं है। आप, मैं, हम सब गौहत्या के भागीदार हैं चाहे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष तरीके से। उससे पहले मैं इन सारी चीजों से बहुत अनजान थी या फिर ऐसा कहूं कि अच्छे से ऐसी बातें समझ नहीं आती थी या फिर यूं कहिए कि पता होते हुए भी अनदेखा करने की आदत सी थी क्योंकि सब ऐसा ही तो करते हैं।

पर कभी-कभी जिंदगी में ऐसा मोड़ आ जाता है की आपको वो सारी चीजों समझ आने लगती हैं जो आप

कभी समझना चाहते भी नहीं थे। मेरे साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ और जिंदगी बिलकुल ही पलट गई, ऐसा समझो कि जिंदगी ने 180° का turn ले लिया हो और अब वो हर उस बात को समझना चाहता है जिसके बारे में उसने कभी सोचा ही नहीं था।

फिर इन कुछ सालों में इस बारे में मैं बहुत कुछ सिखती रही क्योंकि जिंदगी सीखाये जा रही थी। और जब जिंदगी सीखाने लगे न तो सीख लेना चाहिए क्योंकि वो lessons किसी school, college या book में नहीं मिलते हैं। उस समय मन में बहुत सारे सवाल आते थे की ये कैसे हो गया, ऐसा क्यों हो रहा है और इसे कैसे रोका जाए, पर सबके जवाब एक एक करके भगवान देते चले गए। हां, भगवान क्योंकि ऐसे जवाब उनको छोड़कर कोई और दे ही नहीं सकता है।

जिस दिन मुझे पता चला कि इस समस्या का समाधान क्या है, उस दिन मैं खुशी से झूम रही थी की अब आखिरकार इस समस्या का **THE END** करने का FORMULA मिल गया। और इसी को आपसे शेयर करने के लिए मैंने 'शिव भक्त नंदी' इबुक को चुना है।

दुर्भाग्य की बात

गौ हत्या की सच्चाई भारत में पिछले 1000 सालों से बनी हुई है यानी ऐसा एक दिन भी इन 1000 सालों में नहीं हुआ है जिस

दिन भारतभूमि पर गौवंश का रक्त न गिरा हो। पर उस समय की परिस्थितियां तो समझ में आती हैं, कि उस समय कभी मुगलों ने तो कभी अंग्रेजो ने अपनी दुष्टता निकालने का सबसे अच्छा निशाना गोवंश को बनाया था और भारतीयों में इतनी एकता भी नहीं थी कि वो उनके खिलाफ खड़े हो सकें।

पर आज भारत को अंग्रेजों से आजादी मिले 77 साल होने वाले हैं, पर फिर भी गौहत्या नहीं रुकी। इन 75 सालों में गोवंश को क्या मिला- उनके नाम पर होने वाली राजनीति? और अब तो वो भी नहीं होती।

खैर, आजादी के समय भारत में गोवंश की जो स्थिति रही होगी आज वो उससे हजारों गुना ज्यादा बद्तर हो गई है।

एक समय था जब इसी भारत भूमि पर किसी के घर अगर बछड़ा हो जाता था तो लोग मिलकर सोहर (जन्म के समय गया जाने वाला लोकगीत) गाते थे, खुशियां मनाते थे, सोचते थे की भगवान शिव की कृपा बनी है। पर आज कहीं भी जाकर देख लीजिए, घरों में अगर बछड़ा हो जाए तो मातम सा पसर (फैल) जाता है कि हाय! सर पर बोझ आ गया।

कभी सोचा है क्यों?
आखिर ऐसा क्या हो गया की बछड़ों, बैलों और नंदियों की पूजा करने वाला देश अब इन्हें देखते साथ ही लाठी लेकर दौड़ पड़ता

है?
लोग मंदिरों में जाकर नंदी की मूर्ति को तो बड़े आराम से दूध पिला कर आते हैं पर अपने घर के बछड़ों को दूध पिलाने से पहले ही उन्हें कसाइयों के हाथों में डाल देते हैं। क्यों कर रहे हैं लोग ऐसा???
ऐसा क्या हो गया की लगभग 97% गोवंश के भाग में कटना लिखा जा चुका है?
भगवान शिव के भक्त होकर भी आप उनके परम भक्त नंदी को कसाइयों के चंगुल से नहीं छुड़ा पा रहे हैं। क्यों?

सरकार से आशा करना छोड़ दिजिए

पिछले 70-75 सालों में हर मोड़ पर कोई ना कोई आया है जिसने गौहत्या के विरोध में अपनी आवाज उठाई है पर गौ हत्या का समर्थन करने वाली आवाज को कुचल नहीं पाया। क्यों???

क्योंकि उन्होंने आती-जाती सरकारों को ये एहसास करा दिया था कि वो गौ हत्या को रोकने के लिए सरकारों पर आश्रित हैं। और लगभग हर सरकार ने इसका जमकर फायदा उठाया, वोट लेने के लिए और बाद में अपने कानों में रुई डाल ली (वो भी मोटी वाली)।

नहीं तो आप ही सोचिए कि अगर कोई गौ भक्त कभी सत्ता में आया हुआ होता, तो वो सबसे पहला काम क्या करता?

–गौ हत्या को रोकने के लिए ही कुछ करता, करता न?

पर किसने ऐसा किया?
–किसी ने नहीं। क्यों?

क्योंकि उनमें से कोई गौभक्त था ही नहीं और दूसरी बात की जिस देश की GDP में 10% से भी ज्यादा शेयर बीफ (गोमांस) का हो, उस देश की सरकार से ये अपेक्षा भी करना कि वो गौ हत्या या नंदी हत्या को रोकेगी, अपनी महा मूर्खता का परिचय देना है।

अब ये मत सोचिएगा कि वो बीफ गोमांस नहीं, भैंसों का मांस है क्योंकि ऐसा करने से आप हर उस गौरक्षक का अपमान कर रहे हैं जो अपनी जान की बाजी लगा कर भी गौमाता को, नंदियों को कसाइयों से बचाते हैं। अगर गोवंश की हत्या हो ही नहीं रही होती तो वो भला ऐसा क्यों कर रहे होते, हैं न?

पर गौ रक्षा करने का ये तरीका भी सफल नहीं है, तभी तो आज भी गौहत्या हो ही रही है और थमीं नहीं है।

तो क्या है वो तरीका है
जिससे गौवंश safe और secure हो जाएगा?
कोई भोलेनाथ के भक्त नंदी को भोजन की नजर से नहीं देखेगा?
कोई बछड़ों के जन्म पर अपना सिर नहीं पीटेगा?
बछड़ों के जन्म पर फिर से सोहर गाये जायेंगे?

श्री कृष्ण की प्रिय गौ को कोई आंख उठाकर नहीं देखेगा?
अपने घर के आगे नंदियों को देखकर कोई भी लाठी नहीं ढूंढेगा?
गोरक्षकों को जान की बाजी भी नहीं लगानी पड़ेगी?

और
आंदोलन करके इस बहरी, गूंगी और अंधी व्यवस्था को जगाने में अपना समय भी बर्बाद नहीं करना पड़ेगा?
–हां, ये समाधान हमें सरकारों की मदद के बिना ही मिल जाएगा, बस शर्त ये है कि समाधान के बीच में सरकार अपनी नाक ना अड़ाए।

ज्यादातर लोग गलत सोच रहे हैं

आप internet पर search करने जाओ की गौ हत्या कैसे खत्म होगी या गौ हत्या खत्म करने के लिए कौन से कदम उठाने चाहिए तो आपको सही जवाब नहीं मिलेगा। पर हां, ये सब जरूर हो सकता है कि आंदोलन करिए, एकजुट हो जाइए, सरकार पर दबाव बनाकर गौमाता को राष्ट्रमाता घोषित करवाइए या सबसे वाहियात की वीगन बन जाइए।

पर अगर ऐसा होना ही होता तो अब तक तो सैकड़ों ऐसे आंदोलन हो चुके हैं कि गौ माता को राष्ट्रमाता घोषित करो, पर क्या हुआ इतने दिनों में?

सरकार ने उनकी कितनी सुनी?
–मैं तो कहुंगी की सुनी ही नहीं।

पर आप हाथ पे हाथ रख कर बैठे तो नहीं रह सकते हैं ना कि जब सरकार कुछ करेगी तभी गोवंश सुरक्षित होगा, तब तक मरते हैं तो मरने दो। **“आप ऐसा नहीं सोच सकते हैं”**। और अगर आप ऐसा सोच रहे हैं तो मेरी विनम्र विनती है कि आप इस ebook से दूर रहिए क्योंकि ये फिर आपके लिए नहीं है।

मैंने शिव भक्त नंदी लिखा ही उनके लिए है जिनके भीतर सच में परिवर्तन लाने की तीव्र इच्छा है, जो सच में ये सोचते हैं कि गोहत्या बंद होनी चाहिए चाहे तरीका कैसा भी हो।

इस इबुक में मैंने गौहत्या को खत्म करने के लिए कई सारे तरीके बताए हैं, जिसमें आपको गौ रक्षकों की तरह अपनी जान की बाजी भी नहीं लगानी पड़ेगी, ऐसे तरीके जिसका अनुसरण एक 10 साल का बच्चा भी कर सकता है और 60 वर्ष का वृद्ध भी, आप तो फिर भी युवा हैं, नई पीढ़ी हैं, हम और आप ऐसा क्यों नहीं कर सकते हैं?

चलिए अब जानते हैं कैसे???

CHAPTER

1

नंदी:

परम शिवभक्त का परिचय

ALL 29 CHAPTERS ARE LOCKED!!

PURCHASE ‘SHIV BHAKT NANDI’ TO READ FURTHER.

ALL 29 CHAPTERS ARE LOCKED!!

PURCHASE ‘SHIV BHAKT NANDI’ TO READ FURTHER.

शिव भक्त नंदी

BUY NOW

1 | नंदी: परम शिवभक्त का परिचय......02

THE STORY
APPENDIX

इस book में मैंने जो भी solutions बताएं हैं, इन्हें ढूंढने से पहले मुझे गायों से ऐसा कोई विशेष प्रेम नहीं था हालांकि मेरे घर में दो-तीन गायें हमेशा से ही रही हैं और अब तो बछड़े भी हैं पर उनसे प्रेम मुझे तब हुआ जब मैंने उनके कष्टों को करीब से देखा और महसूस किया।

बात ऐसी है कि मेरे घर में एक गाय है जिसका नाम भूरी है। जब वो हमारे घर में नयी-नयी आई थी तो अपने एक बछड़े के साथ आई थी। पर कुछ दिनों बाद ही वो बछड़ा बहुत बीमार पड़ गया और उस समय सर्दियों का मौसम चल रहा था, उसके पेट में किसी तरह की बिमारी हो गई थी भीतर से ही जिसके बारे में घर में किसी को ज्यादा जानकारी नहीं थी। अब क्योंकि उस समय मेरा interest गायों में ज्यादा नहीं था तो मैं बछड़े के पास उसे देखने के लिए ज्यादा जाती भी नहीं थी और अपने पढ़ाई पर ध्यान दिया करती थी पर कभी जाकर अगर उसे देखती थी तो बहुत बुरा लगता था।

और फिर एक दिन वो बछड़ा अपने जीवन से लड़ते लड़ते हार गया। अब क्योंकि वो बछड़ा मात्र दो-तीन महीने का था इसलिए भूरी के थनों में बहुत दूध आया करता था पर अपने बच्चे के बिना वो किसी को भी दूध निकालने नहीं देती थी। और परेशानी की बात ये थी कि अगर उस समय उसके थनों से दूध नहीं निकाला जाता तो वो बहुत गंभीर रूप से बीमार पड़ सकती थी। उस समय हमारे पूरे गांव के गायों को दुहने (दूध निकालना) के लिए पास के ही गांव से एक व्यक्ति आया करता था, और वही भूरी को भी दुहता था क्योंकि पिछले 15-20 सालों से वो ही हमारे घर की गायों को दुहता आ रहा था पर अब नहीं। क्योंकि जब हमारी भूरी बछड़े के बिना दूध नहीं देती थी तो वो चिढ़ कर उसे बहुत मारता था, घर वालों के कहने पर भी नहीं रूकता था जैसे की कोई psycho हो।

ऐसा हर दिन होता था, सुबह और शाम, घर का माहौल एकदम toxic हो चुका था क्योंकि घर में किसी को भी दूध दुहना नहीं आता था और कोई तीसरा इस काम के लिए मिल भी नहीं रहा था (my village problem)। और मैं उधर गाय को देखने भी नहीं जाती थी की उसके साथ क्या हो रहा है और क्या नहीं जो घर में सब कोई परेशान है। मैं सोचती थी की मैं **ये सब कैसे देखूंगी या फिर मेरी जरुरत ही क्या है।** पर एक दिन मैं दूध दुहने वाले के जाने के बाद गाय के पास गई क्योंकि उस दिन गाय बहुत ज्यादा, मतलब बहुत ज्यादा ही परेशान थी। उस दिन मुझे अचानक से पता चला कि **गाय को भी कष्ट होता है, दुख होने पर वो भी हमारी तरह ही रोते हैं।**

उस दिन गाय के चिल्लाने की आवाज मेरे कानों में अभी भी गूंजती है। मैं जब ये लिख रही हूं तो भी वो आवाज मेरे कानों में गूंज रही है।

मेरा निश्चय

उस दिन मेरे मन में अचानक से ये ख्याल आया की इसे रोकने के लिए मुझे कुछ तो करना चाहिए क्योंकि कभी-कभी कुछ चीजें बहुत ज्यादा परेशान करने लगती हैं और दिमाग से जाने का नाम ही नहीं लेती है। और फिर मैंने सबसे पहले तो ये निश्चय किया कि अब चाहे जो हो जाए पर अब और उसे गाय को मारने नहीं दूंगी, समाधान बाद में ढूंढ़ लेंगे पर पहले निश्चय करना मुझे ज्यादा जरूरी लगा। मेरे दिमाग में कोई solution नहीं था, बिलकुल खाली, पर दिमाग में जो भी थोड़ा बहुत था वो ये था की अब मुझे ही दूध दुहने के लिए सीखना पड़ेगा, पर मेरे पास इससे संबंधित कोई ज्ञान नहीं था तो ये करना उस समय बहुत मुश्किल हो जाता और दूसरा ये था की मैं दोहक (दूध दुहने वाला) को ही समझाऊं और ऐसा करना मेरे लिए आसान भी था तो मैनें इसी रास्ते को चुना।

और फिर जब भी वो भूरी को दुहने आता तो मैं भी उसके पीछे-पीछे जाती और जब भी वो उसे मारना चाहता तो मैं उसे मारने नहीं ही देती थी कभी कुछ से कुछ कहकर तो कभी समझाकर, कभी ये कहती की दूध अगर जमीन पर गिर भी जाए तो भी मुझे कोई दिक्कत नहीं है तो कभी ये कहकर की ये मेरी गाय है,

उसकी नहीं जो वो कुछ भी कर सकता है और कोई उसे कुछ नहीं बोलेगा और आश्चर्य की बात तो ये थी की उसने मेरी बात पहले दिन से ही मान ली थी। पर फिर भी मैने उसी समय ये निश्चय कर लिया था की ऐसे psychos मेरे घर में इस phase के बाद फिर कभी न आने पायें क्योंकि कोई नहीं जानता की ऐसे लोग कब क्या कर दें।

फिर उसके 10-15 दिनों के बाद ही गाय ने दूध देना बंद कर दिया (पता नहीं क्यों, क्योंकि अभी उसके थनों में अच्छी मात्रा में दूध हो ही रहा था), हो सकता है उतने दिनों में बार-बार मार पड़ने से उसके मस्तिष्क पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा हो।

हो सकता है की इसे पढ़ने के बाद आपको मुझ पर बहुत गुस्सा आ रहा हो की मैंने पहले कुछ क्यों नहीं किया, मुझे भी आता है पर उस समय मैं बस 15 साल की थी। जानती हूं, कि इतनी आयु में लोगों को इन चीजों को समझने की काफी अच्छी शक्ति होती है पर मुझ में नहीं थी क्योंकि मैं इन चीजों से काफी दूर रहा करती थी और आज के समय में लगभग हर कोई इन चीजों से काफी दूर ही है तो मैं भी थी। हालांकि बचपन में जब मैं बस 5 साल की ही थी तभी से मैंने मांस-मछली खाना छोड़ दिया था और कारण उन्हें होने वाला कष्ट ही था जिसके बारे में मुझे मेरी बड़ी बहन से पता चला था।

पर पता नहीं यहां मैं ये सब कैसे भूल गयी?

-हो सकता है स्कूल और so called "education" के चक्कर में मन से ही निकल गया हो।

पर अब जब याद आ गया है तो मैंने इस बारी इसे भूलने नहीं दिया।

जिन चीजों का सामना करने में मुझे डर लगता था अब वो सारी चीजें चुटकियों में हो जाती हैं जैसे गाय का दूध निकालना (इसलिए अब वो दुहने नहीं आता), गाय को बाहर-भीतर करना, सेवा करना, वगैरह-वगैरह। मेरी real education तो वास्तव में यहां से शुरू हुई थी। और इसी समय मुझे जो सबसे बड़ी चीज पता चली, वो ये थी कि ऐसी ही गायो को कुछ लोगों के कारण काट दिया जाता है और ऐसा करने के लिए कई लोगों ने जाल बिछा रखे हैं। उस दिन मुझे बहुत दुःख हुआ था पर सच का तो विश्वास करना ही पड़ता है तो मैंने भी किया क्योंकि सच को झूठलाने के बजाय सच का सामना करना ज्यादा बेहतर होता है।

पर सामना कैसे करूं????

- ना घर वालों का सहयोग, ना स्वयं में इतना आत्मबल की कोई बड़ा निर्णय ले सकूं। पर जो भी हो, हमने उस समय ही ये ठान लिया था कि अब चाहे जो भी हो जाए पर हम अपनी ओर से पुर्ण प्रयास करेंगे की भारत गोवध के कलंक से मुक्त हो जाए और ये **'शिव भक्त नंदी' ebook उसकी पहली सीढ़ी है**।

हो सकता है आप अभी ये सोच रहे हों कि ये ebook तो नंदियों के नाम पर लिखा हुआ है पर ये क्या मैंने तो बातों को बस गायों के आसपास ही घुमा दिया।

नहीं, मैंने ये ebook पुरे गोवंश के लिए ही लिखा है चाहे वो गाय हो या नंदी या फिर बैल। मैं आपको नंदियों के बारे में भी बताऊंगी पर उससे पहले गायों के बारे में बताना मुझे ज्यादा जरूरी लगा क्योंकि गौ माता के माध्यम से ज्यादातर लोग बेहतर ढंग से समझ पाते हैं।

नंदियों से भी प्रेम होने के पीछे मेरे जीवन में एक कहानी है वर्ना उससे पहले तो मुझे पता ही नहीं था कि एक समाज में नंदियों का काम क्या होता है और क्यों वो समाज के लिए बहुत जरूरी हैं।

बात ऐसी है कि आज से डेढ़ साल पहले मेरी एक छोटी वाली गाय ने अपना पहला बच्चा दिया- **बछड़ा**। मेरे घर में तो सभी खुश थे खास कर मैं पर जब वो बछड़ा घर के बाहर जाता तो गांव के ज्यादातर लोग बोलने लगते
-अरे! इतना सुंदर बछड़ा है, बछड़ी होता तो कितना अच्छा होता।

-मुझे ऐसी बातें सुनकर बुरा लगता था, बहुत बुरा लगता था, पर मैं भी कह देती थी कि मेरा बछड़ा किसी बछड़ी से कम नहीं है और दूसरे बछड़ों से बहुत अलग है।

पर लोग कहते थे कि कुछ भी कर लो, चाहे कितना ही दूध क्यों ना पीला लो, एक दिन तो घर से चला ही जाएगा।
-कहां और क्यों???

अरे! जहां हर बछड़ा जाता है, कसाई के पास।

–"ऐसे कैसे चला जाएगा?" **मैं पालूंगी इसे जीवन भर!**

अरे! बछड़े को अब कोई बैठा कर नहीं खिलाता क्योंकि बछड़े किसी काम के नहीं होते हैं।

ये एक shocking point था मेरे लिए की जिस बछड़े को मैं इतना दुलार कर रही हूं, वो किसी काम का ही नहीं है। मैंने इस बात पर विश्वास ही नहीं किया क्योंकि मुझे लगा ये सच हो ही नहीं सकता है। अगर भगवान ने गोवंश की रक्षा के लिए कहा है तो व्यर्थ में कभी नहीं कहा होगा, कुछ ना कुछ तो इनका काम होगा ही तभी तो नंदी शिव शंभू का वाहन है। **वाहन???**

अब मैं लगी इंटरनेट पर ढूंढने की बछड़ों का क्या काम होता है और फिर जो चीजें मेरे हाथ लगी तो मुझे पता चला कि आज जो गोवंश की हत्या हो रही है ना उसका कारण केवल और केवल हम लोग हैं। हां, आप भी और मैं भी। क्यों???

क्योंकि हमने बछड़ों के सारे काम छीन लिए हैं, उन्होंने बेरोजगार बना दिया है, हमने उन्हें कटने पर विवश कर दिया है। अगर हमने ऐसा ना किया होता तो आज शायद गोवंश सुरक्षित होता पर मौत के मुंह में हमने ही धकेला है तो फिर क्या ही कहने? इस सब के बारे में मैंने 'शिव भक्त नंदी' ebook में आपको बता ही दिया है और अपने इसी बछड़े से प्रेरित होकर इस ebook को मैंने **'शिव भक्त नंदी'** नाम दिया है।

आज का समय भले ही विपरीत दिशा में चल रहा हो, हर चीज उल्टी दिशा में ही जा रही हो, पर हमें ये नहीं भूलना चाहिए कि विपरीत समय, दुख के समय ही हमें भगवान के निकट ले जाते हैं। क्यों ना हम इस विपरीत समय को एक अवसर की भांति देखें कि इन विपरीत परिस्थितियों में हम ऐसा क्या कर सकते हैं जिससे इस पृथ्वी के ही नहीं बल्कि संपूर्ण ब्रह्मांड के पिता हमसे प्रसन्न हो जाएं? इस ब्रह्मांड के पिता के निकट जाने के लिए ऐसे कार्यों को करने का फायदा आपको जरूर उठाना चाहिए और **इससे ज्यादा किसी को और क्या ही चाहिए होगा?**

आज हमारे पास अवसर है कि हम केवल गौ सेवा करके ही भगवान तक पहुंच सकें, केवल गौ रक्षा करके ही भगवान को प्रसन्न कर सकें वर्ना भगवान को प्रसन्न करना इतना भी आसान नहीं होता है। जन्मों-जन्मों की तपस्या लग जाती है फिर भी भगवान प्रसन्न नहीं होते, पर जब व्यक्ति विपरीत परिस्थितियों में भी धर्म का पालन करता है तो भगवान जरूर प्रसन्न होते हैं। इसलिए भगवान को प्रसन्न करने का ये सुनहरा अवसर मत गवाइए।

स्मरण रखिए -

कर्म सदा अच्छे होने चाहिए,
कोई देखे या ना देखे.....
भगवान हमेशा देख रहे होते हैं।

मैंने इस ebook में वो हर चीज बताने का प्रयास किया है जो एक व्यक्ति को जानना ही चाहिए, आशा है आप ये ebook पूरा जरुर

पढ़ेंगे और उसके बाद गोवंश की सेवा के लिए, गोवंश की रक्षा के लिए कोई ना कोई संकल्प भी जरुर लेंगे।

अगर आप इस ebook को पढ़ते हैं तो मैं आपको ये सांत्वना देती हूं की आप ये कभी नहीं सोचेंगे कि आपका समय व्यर्थ हुआ है बल्कि इसे पढ़ने के बाद आप कभी अपना समय व्यर्थ नहीं कर पाएंगे।

तो अब आप क्या सोच रहे हैं?
'शिव भक्त नंदी' ebook जल्दी पढ़िए। **हमारे पास खोने के लिए ज्यादा समय नहीं है**, हर क्षण गौ हत्या से माता पृथ्वी को कष्ट हो रहा है, धर्म की हानि हो रही है और इस देश में रहने वाला हर व्यक्ति इस पाप का भागीदार बन रहा है। कुछ करिए, नहीं तो ये विपरीत समय का अवसर भी आपके हाथों से फिसल जायेगा।

अगर आप अभी तुरंत 'शिव भक्त नंदी' ebook को खरीदते हैं तो आपको 10% का discount भी मिलेगा NANDI10 Coupon code उपयोग करने पर।

CLICK THIS TO PURCHASE
SHIV BHAKT NANDI
AND CONTRIBUTE IN SAVING THE
GAUVANSH- THE SOLE OF HINDUISM